सी बी टी प्रकाशन

गवैया गधा

शंकर



गवैया गधा

लेखकः शंकर

चित्रांकनः जगदीश जोशी



चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली



एक बूढ़ा गधा रात में अकेला घूम रहा था। उसे देखकर एक चालाक सियार ने पूछा, "क्यों काका! इस समय कहां चले?"

गधे ने कहा, "अरे भतीजे, मैं एक धोबी के घर में काम



करता हूं। लेकिन वह मुझे पेटभर खाना भी नहीं देता है। रात होते ही वह मुझे खोल देता है। घूमतेघामते मुझे जो कुछ मिल जाता है वही खा लेता हूं।"





"तब तो काका, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं। मुझे भी भूख लगी है।"

गधा और सियार दोनों साथ-साथ चलने लगे।





चलते-चलते दोनों एक खीरे के खेत में पहुंचे। दोनों ने पके-पके खीरे जितने खा सकते थे खाए।



गधे ने तो इतना खाया, इतना खाया कि उसका पेट फूलकर जमीन को छूने लगा।

फिर गधा सियार से बोला, "बेटा, इतने बढ़िया खीरे तो मैंने पहली बार खाए हैं। आज मैं बहुत खुश हूं। भई,

अब तो मेरा जी गाने को कर रहा है।"

"अरे काका! गाना मत शुरू कर देना।"

"क्यों भतीजे, क्यों नहीं?" गधे ने पूछा।

"क्योंकि खेतवाले तुम्हारा गाना सुन लेंगे।"

"सुनने दो। मैं किसी की परवाह नहीं करता। उनको भी मेरा गाना सुनकर मजा आएगा। तुम्हें गाना नहीं आता इसीलिए तुम मुझे भी मना कर रहे हो," गधा बोला।





सियार बोला, “अच्छा काका, तुम गाओ, मैं चला। मैं तुम्हारा गाना दूर से ही सुनूंगा।”

गधे ने मुंह ऊपर उठाया और ऊंची आवाज में गाने लगा।





किसानों ने जब खेत में गधे को रेंकते सुना, तो वे सब लाठी लेकर भागे और खेत में जा पहुंचे। सबने मिलकर गधे को इतना मारा कि वह जमीन पर गिर पड़ा। फिर वे सब



उसे घसीटकर खेत के बाहर ले गए और उसे सड़क पर डालकर चले गए।

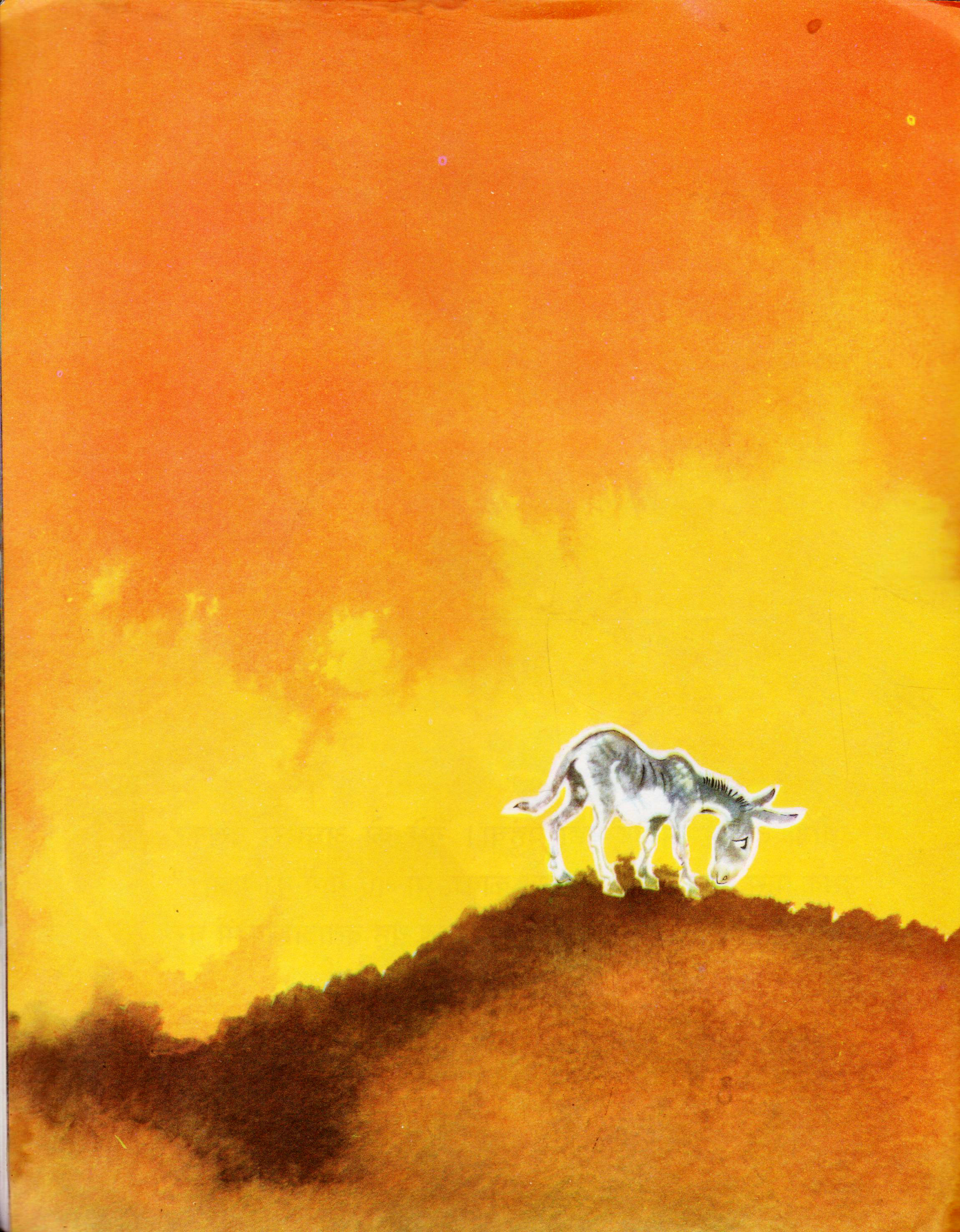




थोड़ी देर में सियार वहां पहुंचा। गधे को अधमरा देखकर उसके पास आकर बोला, "क्यों काका, पा गए गाने का मजा?"

"अरे भतीजे, अब बहुत हो चुका। अब यह बताओ कि मैं घर कैसे पहुंचू?"

"काका! चिंता काहे की, धोबी खुद ही आकर तुमको ले जाएगा।" और सियार आगे बढ़ गया।





GAWAYYA GADHA

पुनर्मुद्रण 1983, 2006, 2007

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट नेहरू हाउस, 4 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित एवं न्यास के इंद्रप्रस्थ प्रेस में मुद्रित। दूरभाष: 23316970–74
फैक्स: 23721090 ई-मेल: cbtnd@vsnl.com वेबसाइट: www.childrensbooktrust.com

ISBN 81-7011-222-2

Rs. 20.00 H 117